| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ***<u>उद्देश्य</u> -*** *इस कोर्स का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय संगीत (स्वरवाद्य) के प्रयोगत्मक पक्ष में दक्ष बनाना है।* | | | | |
| द्वितीय सेमेस्टर | | | | |
| 6 | प्रयोगात्मक - 3 | एम0पी**0**ए0एम0आई0-5**07** | **200** | 4 |
| | ** मंच प्रदर्शन - **20** मिनट का ( निम्न रागों में से किसी एक में)* | | | |
| | इकाई **1 -** अहीरभैरव | | | |
| | इकाई **2 –** झिंझोटी | | | |
| | • *मंच प्रदर्शन जिस राग में हो उसमें निम्न चीजे होना आवश्यक है- मसीतखानी गत, रजाखानी गत, आलाप, जोड़, आलाप, तोड़े व झाला।*<br>• *मंच प्रदर्शन का समापन इच्छित धुन द्वारा।* | | | |
| द्वितीय सेमेस्टर<br>*राग - अहीर भैरव, झिंझोटी, बैरागी, बिहागड़ा, व मालकौंस* *ताल - झपताल, एकताल, रूपक व **9** मात्रा की ताल* | | | | |

सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री -


1.वसन्त, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0 प्र0। 2. श्रीमती शान्ति गोवर्धन, संगीत शास्त्र दर्पण।

3. डॉ0 लक्ष्मीनारायण गर्ग,राग विशारद( दोनों भाग), संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0 प्र0। 4. पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे, भातखण्डे क्रमिक पुस्तक मालिका (सभी भाग), संगीत कार्यालय, हाथरस, उ0 प्र0।

5. एस0एस0 परान्जपे, भारतीय संगीत का इतिहास